शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रतीक-योजना

डॉ. दीपक शर्मा (शोधार्थी)
डॉ. शशि जोशी (निर्देशक)
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय,
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी कहानीमें अनूठा नयापन उपस्थित किया। संवेदना के स्तर पर उनकी कहानियाँ सांकेतिक हैं और परिवेश की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय भावबोध का स्पर्श करती हैं। उनकी कहानियों में एक खास किस्म का अवसाद मिलता है। आज भीड़ में व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस करता है। सांकेतिकता के कारण उनकी कहानियाँ विशिष्ट बन गयीं। प्रस्तुत शोध पत्र में निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रतीक योजना पर विचार किया गया है।

प्रतीक का अर्थ

प्रतीक का सामान्य अर्थ आकार, संकेत, चिह्न, प्रतिरूप या इंगित माना जाता है। मानव अपने भावों को मार्मिक बनाने के लिए प्रतीक का सृजन करता है, जिसके मूल में अनुभूति के साथ विशेष अर्थबोध छिपा होता है। "साहित्य में प्रतीक शब्द उस गोचर वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है, जो किसी अगोचर अथवा अप्रस्तुत विषय का प्रतिविधान करती हो। कहना यह है कि किसी अदृश्य वस्तु अथवा भाव को व्यक्त करने के लिए किसी दृश्य वस्तु का प्रस्तुतीकरण उस अदृश्य (वस्तु अथवा भाव) का प्रतीक होगा तथा साहित्य में अमूर्त, अदृश्य, अश्रव्य एवं अप्रस्तुत विषय का प्रतिनिधित्व मूर्त, दृश्य, श्रव्य एवं प्रस्तुत विषय द्वारा किया जाना ही प्रतीक-पद्धति का प्रयोग कहलायेगा।"1 जटिल, दुरूह और रहस्यमय भावों के लिए प्रतीक अभिव्यक्ति का अनिवार्य साधन माना गया है। बिम्ब और बिम्ब से बने प्रतीक भाषा को एक काव्यात्मक रूप प्रदान करते हैं।

"मनुष्य के भावलोक में बहुत्सी ऐसी बातें होती है जिन्हें हम सामान्य व्यवहार की भाषा अथवा स्थूलाश्रयी बिम्बों के माध्यम से नही व्यक्त कर सकते। ऐसे सूक्ष्म तथा अर्द्धस्पष्ट भावों के लिए मनुष्य प्रतीकों की सृष्टि करता है। मानव सभ्यता के विकास के प्रतीको का उतना ही योग है जितना हमारे जैविक विकास में सूर्य अथवा जल का।"2 प्रतीक का प्रयोग धार्मिक ग्रंथों के अलावा गणित, तर्कशास्त्र, विज्ञान, दर्शनशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र आदि महत्वपूर्ण विषयों मे होते रहे है। भारतीय धर्म में प्रतीक का विशेष महत्व है। धर्मो से जुड़े अनेक मत-मतान्तर, रहस्यमय अभिव्यक्ति प्रतीकों में निहित है। यूरोप मे प्रतीकवाद नाम से एक आन्दोलन भी चला जिसका प्रभाव साहित्य के अलावा चित्रकारों पर भी पड़ा। हिन्दी काव्य में छायावाद,

प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और आज की नयी कविता मे प्रतीक-योजना पाश्चात्य प्रतीकवाद से प्रभावित है। काव्य में ही नही बल्कि कहानियों और उपन्यासों में भी प्रतीक का प्रचलन देखा जा सकता है। आधुनिक कथाओं की शैलियों में प्रतीकात्मक शैली महत्वपूर्ण और प्रभावी बन चुकी है। कला में इसका अनुसरण एक साधारण रचनाकार नहीं कर सकता है। "नया कहानीकार स्वातंत्र्योत्तर युग के सम्पूर्ण परिवेश को कथ्य में समेटने के लिए ऐसे प्रतीकों की योजना करता है जो अनेकार्थी व्यंजना कर सकें। कहीं युग के तनाव को परंपरागत प्रतीकों में ढूंढता है, कहीं बिलकुल नवीन कल्पनाएं करता है। नए कहानीकार ने एक ओर जहां 'अभिमन्यु की आत्महत्या' जहां लक्ष्मी कैद है, 'सावित्री नं' दो, शबरी, राजा निरबंसिया आदि कहानियों में प्राचीन चरित्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की समस्याओ को उठाया है, वहीं फौलाद का आकाश, नीली झील, मछलियां, ग्लास टैंक, परिन्दे, झाड़ी, रीछ, आइसबर्ग आदि में नवीन प्रतीकों की योजना की है। कहानी में प्रतीकों का यह प्रयोग अलंकरण के प्रति रूझान नहीं था, बल्कि भाषा को अर्थगर्मित बनाने का माध्यम था।"3

निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रतीक योजना

निर्मल वर्मा की कहानियों में भावोत्प्रेरक प्रतीक, परम्परामुक्त आधुनिक प्रतीक, व्याख्यात्मक प्रतीक, यौन प्रतीक, प्रकृतिपरक प्रतीक तथा वैयक्तिक प्रतीक आदि प्रतीकों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से हुआ है। 'डायरी का खेल' कहानी में बिट्टो गौरेया का प्रतीक है जो इधर-उधर फूदकती रहती है तथा अप्रवासी पक्षी की तरह कभी भी उड़ जायेगी। "मेरी आंखे नीरजा के चेहरे पर उठी रहीं। वह गली की रोशनियों के पार अंधेरे मे देख रही थी, अंधेरे के परे आकाश था जहां कुछ तारे टिमटिमाने लगे थे।"4 'तीसरा गवाह' में 'अंधेरे' नीरजा का दुखत जीवन का प्रतीक है। आकाश, तारे - 'मुक्ति' और सुख का स्वप्न है।

"संगमरमर-सी सफेद दो बांहे काली झील से ऊपर उठी है-कातर-सी होकर मुझे बुलाती है- बार-बार अपनी ओर खींचती है।"5 यहाँ 'काली झील' वासना और कामना का प्रतीक है। प्रतीकों के सन्दर्भ में डॉ. मधु संधु कहानीकार निर्मल वर्मा में लिखती है, "परिन्दे के पात्र परिन्दों से भी गए बीते हैं। वे उड़कर कहीं भी नहीं जा सकते। डॉ. कृष्ण भावुक के शब्दों मे -'परिन्दे' मरणधर्मा मनुष्यों के प्रतीक हैं और कहानी के अन्त में बुझता हुआ लैम्प मरणासन्न ह्यूबर्ट का संकेत करता है। 'लवर्स' में प्रेमियों का मिलन स्थल हुमायूं का मकबरा है जो प्रेम की मृत्यु का प्रतीक है। यहा लड़की बर्फ और लड़का पतझड़ का प्रतीक है। 'माया दर्पण' में इंजीनियर बाबू सीढ़िया उतरते हैं तो सारा घर हिल उठता है। यहां घर हिलना तरन के व्यक्तित्व के हिलने का प्रतीक है। एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है- दूर-दूर तक रेतीली जमीन फैली थी। अस्त होने से पहले सूरज की पीली किरणें कच्चे सोने की-सी रेत पर बिखर गई थी। नई सड़क के दोनों ओर रोड़ी-पत्थरों के ढ़ेर छोटे-छोटे पिरामिड जैसे खड़े थे। उन्ही के संग-संग चलती हुई तरन पानी के टैंक तक पहुंच गई थी।' यहाँ रेतीली ज़मीन के आसपास का वातावरण अस्त होता हुआ सूरज बाबू है। कच्चे सोने की-सी रेत तरन है। रोड़ी पत्थर बाबू का अहं है तथा पानी का टैंक इंजीनियर बाबू है। 'कुत्ते की मौत' में सभी प्राणी मर रहे हैं। माँ को पराए घर ने; उन्हें नितिन की बेकारी ने, पिता को पुराने रोग ने, मुन्नी को उम्र के पहले दुःख ने एक मौत दी है। नेमिचन्द्र के

अनुसार-कुत्ते की मौत में, और मलामै जैसी सूक्ष्म प्रतीक पद्धति का प्रयोग आशय अभिव्यक्ति दोनो क्षेत्रो में आ गया है। कहानी के आरंभिक वातावरण में ही यह विशेषता देखी जा सकती है। "फिर वह भी एक रात है। घर के हर प्राणी के कान ऊपर लगे हुए है। एक मरमराती-सी चीख सुनाई देती है। घर का सन्नाटा सिहर जाता है केवल पल लिए। पहाड़ में बच्चा पहाड़ हो गया है। 'जलती झाड़ी' यौन का प्रतीक लिए है। उनके कमरे में 'हवा' में डोलते एरियल पोल पर फंसी हुई अन्धेरे मे फड़फड़ाती खिड़की से झांक रही उस गृहस्थ स्त्री का प्रतीक लिए है जो गृहस्थ के एरियल पर पतंग सी फड़फड़ा रही है।"6

निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों में अज्ञेय का प्रमुख प्रतीक-साँप का प्रयोग भी प्रतीकात्मक रूप से काम वासना और गुप्त भावना के लिए किया है। "साँप का फन धीरे से काँपा मानो पतंगे के इस अचानक आक्रमण से वह चौंक गया हो। एक हल्की-सी सरसराहट देर एक लैम्प शेड के इर्द-गिर्द मँडराती रही।"7

"बड़ी बहन ने चुपचाप करवट बदल ली। लैम्प शेड पर समुद्र की लहर अँधेरे में डूब गई, किन्तु देर तक लगता रहा, जैसे सांप का फन अब भी उनके पीछे खड़ा हो, स्तब्ध और स्थिर...।"8

सांप, भागता हिरन, भूत, कालीद्वीप, कालीझील आदि निर्मल के यौन भावना के प्रतीक है। "उसने उसका चेहरा, जो अब वक्ष के नीचे उतरकर कुछ और टटोलने लगा था, बीच में रोक दिया और क्या याद रहेगा? पेड़ों के बाद बदन में भागता यह हिरन"9

फूल प्रेम और जीवन्तता का प्रतीक होता है, लेकिन निर्मल की कहानियों में इसे मृत्यु एवं अंधविश्वास का प्रतीक बताया गया है।

"आखिरी बार जब मैने किसी कमरे में देर से फूल देखे थे, तब मेरी दादी मरी थी।"10 सूखा कहानी के पात्र को फूल डिप्रेस करने लगते है। " मुझे फूल कभी अच्छे नही लगे- वे मुझे हमेशा थोड़ा-तो डिप्रेस करने लगते थे- वे हमेशा मुझे मकबरे पर खुदी मीनाकारी की याद दिलाते थे, विचित्र रूग्ण किस्म का सौन्दर्य, जो कहीं मृत्यु से जुड़ा है।"11

'बीच बहस में' समूचा अस्पताल लहरों से जूझता, डूबता जहाज का प्रतीक है और मरीज-जहाज पर सवार यात्रियों का जो लहर रूपी-रोग और मृत्यु से संघर्ष कर रहे है।

"छोटा क्यूबिकल-सा दीखने वाला कमरा दो वार्डो के बीच में था। दोनों तरफ की आहें लहरों-सी आकर यहाँ टूट जाती थी। जब कभी उसे नींद न आती, तो वह उन्हें सुनता रोगियों की पीड़ित देहों से उठती हुई लहरों को और तब उसे मायावी-सा भ्रम होता कि समूचा अस्पताल एक जहाज हो लहरों से जूझता हुआ जबकि वह और उसका मरीज अपने केबिन में सुरक्षित हो।"12

निष्कर्ष

निर्मल वर्मा की कथाओं में ऐसे कई प्रतीक हैं जो जीवन के सच्चे अनुभव से जुडे हैं। अधिकांश प्रतीक आधुनिक वैयक्तिक चेतना से संबंधित होने के कारण उनका कलात्मक महत्व है। निर्मल के प्रतीकों के पीछे छिपे हुए वह रहस्य हैं जिसका रागात्मक संबंध मानव मन की आन्तरिक व्यथा से है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सत्यदेव मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र अधुनातन सन्दर्भ, पृष्ठ 349

2. केदारनाथसिंह कल्पना और छायावाद, पृष्ठ 104

3. डॉ. हेमलता- नई कहानी की संरचना, पृष्ठ 242

4. निर्मल वर्मा- परिन्दे, पृष्ठ 43

5. *निर्मल वर्मा- परिन्दे, पृष्ठ 72*
6. *मधु संधु कहानीकार निर्मल वर्मा, पृष्ठ 133*
7. *निर्मल वर्मा- पिछली गर्मियों में, पृष्ठ 58*
8. *निर्मल वर्मा- पिछली गर्मियों में, पृष्ठ 62*
9. *निर्मल वर्मा- बीच बहस में, पृष्ठ 34*
10. *निर्मल वर्मा- पिछली गर्मियों में, पृष्ठ 73*
11. *निर्मल वर्मा- सूखा तथा अन्य कहानियां, पृष्ठ 66*
12. *निर्मल वर्मा- बीच बहस में, पृष्ठ 89*